डॉ.सी.वी.रामन् विश्वविद्यालय, करगीरोड कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

भाषा विज्ञान विभाग

मातृ भाषा दिवस 22 फरवरी 2020

डॉ.सी.व्ही.रामन् विश्वविद्यालय कोटा में अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह सम्पन्न।

22 फरवरी को अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह के प्रमुख अभ्यागत डा. अलका पन्त कला संकायाध्यक्ष सी.एम.डी.स्ना.महाविद्यालय, कार्यक्रम के अध्यक्ष डा. आर. पी. दुबे कुलपति डा. सी. व्ही. रामन् विश्वविद्यालय ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में सम कुलपति डॉ. पी. के. नायक डॉ. सी. व्ही. रामन् विश्वविद्यालय, श्री अरविंद तिवारी निर्देशक दूरस्थ शिक्षा एवं डॉ. वी. पी. मिश्र कलासंकायाध्यक्ष उपस्थित रहे। समारोह का शुभारंभ सरस्वती पूजन से हुआ, तत्पश्चात एम. फिल.(हिन्दी) की छात्रा कु. अलका रिनी खलको ने अपनी मातृभाषा कुडुख बोली में लोकगीतों की शानदार प्रस्तुती की तथा बी.ए. की छात्राओं द्वारा पारम्परिक लोकनृत्य प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम में सर्वप्रथम विश्वविद्यालय के कलासंकाय के अध्यक्ष डॉ. वेदप्रकाश मिश्र ने माननीय अतिथियों का आत्मीय स्वागत करते हुए कहा कि भाषा विज्ञान विभाग द्वारा आयोजित मातृ भाषा दिवस के इस गरिमामय समारोह में विद्वान अतिथियों एवं अधिकारिक वक्तव्यों से मातृभाषा एवं भाषा विज्ञान के शोधार्थियों एवं जिज्ञासु श्रोताओं को शोध की नई दिशा प्राप्त होगी। आज विश्व में अनेक भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं। मातृभाषाओं को जीवंत बनाये रखने एवं संपोषित करने हेतु ही विश्व मातृभाषा दिवस का आयोजन किया जाता हैं।

दूरस्थ शिक्षा विभाग के निर्देशक श्री अरविंद तिवारी ने कहा कि आज ज्वलन्त प्रश्न यह है कि मातृभाषा के प्रति हम अपनी नैतिक जिम्मेदारी कितनी निभा रहे हैं। आज के इलेक्ट्रानिक उपकरणों व्हाट्सअप आदि भाषा को विकृति की ओर ले जा रहे हैं। इस ओर ध्यान देना आवश्यक है। आज संकल्प लेने का दिन है,कि हम अपनी मातृभाषा का सम्मान करें, साथ ही अन्य भाषाओं का भी।

समकुलपति डॉ. पी. के. नायक ने भाषायी विविधता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि भाषायी कट्टरता को त्यागना होगा। भाषा संस्कृति से जुडी है। जब हम अपनी मातृभाषा का ही सम्मान नही करेंगें तो राष्ट्रभाषा को कैसे सम्पन्न बनायेंगें।

विश्वविद्यालय के भौतिक विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. अजीत कुमार श्रीवास्तव ने मातृभाषा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा कि जब आप किसी व्यक्ति से उसकी मातृभाषा में बात करते हैं,तो वह आपसे अपनेपन की अनुभूति करता है। आपने देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद का दृष्टान्त प्रस्तुत करते हुए कहा कि वे अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से हमेशा अपनी मातृभाषा में बात किया करते थे।

इस अवसर पर आयोजित सभा को संबोधित करते हुए समारोह प्रमुख अभ्यागत प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. अलका पन्त विभागाध्यक्ष हिन्दी (सी.एम.डी.महाविद्यालय बिलासपुर) ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि मानव समाज को परस्पर जोडने एवं पृथक करने के प्रमुख चार कारक हैं। भाषा, धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता। इसमें सर्वप्रमुख कारक भाषा हैं। मनुष्य अन्य जीवजन्तुओं से श्रेष्ठ इसलिये माना गया है,कि उसके पास भाषा की शक्ति है, जबकि अन्य जीवजन्तु के पास सिर्फ ध्वनि है। भाषा का जन्म कब हुआ यह कह पाना तो कठिन है।

लेकिन यह तो निर्विवाद सत्य है, कि विश्व की सर्वाधिक प्राचीन भाषा संस्कृत है। विश्व के सबसे प्राचीन ग्रंथ हमारे वेद माने गये हैं, जो संस्कृत में हैं। इससे प्रमाणित होता है,कि संस्कृत भाषा का उद्भव वेदों की रचना के

बहुत पूर्व हो गया था। अन्य भारतीय भाषाओं एवं बोलियों का जन्म संस्कृत के गर्भ से ही हुआ है। भाषायें जहाँ सामाजिक रूप से हमें जोड़ती हैं, वहीं दूसरी ओर अपनी भाषा को श्रेष्ठ समझने की अहंकारिक प्रवृत्ति हमें तोड़ती भी हैं। अँग्रेज अपनी भाषा को सर्वश्रेष्ठ और भारतीय भाषाओं और संस्कृति को गँवारों और जंगलियों की भाषा संस्कृति कहकर उपेछित करते थे। भाषा हमारे विचारों एवं भावों से जुड़ी हैं। हमें जीवनपर्यन्त अपनी भाषा पर गर्व,सम्पोषण, और सम्मान करना चाहिये। भारत की बहुभाषायी संस्कृति अनेकता में एकता का बेहतरीन उदाहरण हैं।

समारोह के अध्यक्ष विश्वविद्यालय के कुलपति ड़ा॔. रविप्रकाश दुबे ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में मातृभाषा की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहा कि जिस प्रकार माँ का कोई विकल्प नही होता उसी प्रकार मातृभाषा का भी कोई विकल्प नही होता। नवजात शिशु सर्वप्रथम स्पर्श के पश्चात भाषा के माध्यम से ही अपनी माँ से जुड़ता हैं। मातृभाषा की विशेषता को दृष्टिगत करते हुए सन् 1999 में युनेस्को में 21 फरवरी को मातृभाषा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया। सन् 2013 तक विश्व में लगभग 750 भाषाएँ प्रचलित थीं, जिनमें आज 350 भाषाएँ विलुप्ति के कगार पर हैं। भाषाओं की रक्षा हेतु उसे रोजगारोन्मुखी बनाना आवश्यक हैं। आप ने कहा कि सभी भाषाएँ श्रेष्ठ हैं। हमें अपनी मातृभाषा के साथ ही अन्य भाषाओं का भी सम्मान करना चाहिए, और आवश्यकतानुसार अन्य भाषा भी अवश्य सीखनी चाहिए।

इस अवसर पर डॉ. अंजू तिवारी (इतिहास विभाग) ने छत्तीसगढ़ी एवं हिन्दी में काव्यपाठ प्रस्तुत किया। डॉ. आँचल श्रीवास्तव (विभागाध्यक्ष हिन्दी) ने देशदुनिया की भाषायी विविधता की चर्चा करते हुए भारत को सर्वाधिक भाषायी विविधता के बावजूद राष्ट्रीय एकता की बात करते हुए आमंत्रित अतिथियों एवं उपस्थित सुधि श्रोताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

Shrivastava
डॉ० आँचल श्रीवास्तव
हिन्दी विभाग